अक्टूबर-नवम्बर-दिसम्बर 2024
मूल्य : ₹ 100

पुरवाई

सृजन की उड़ान

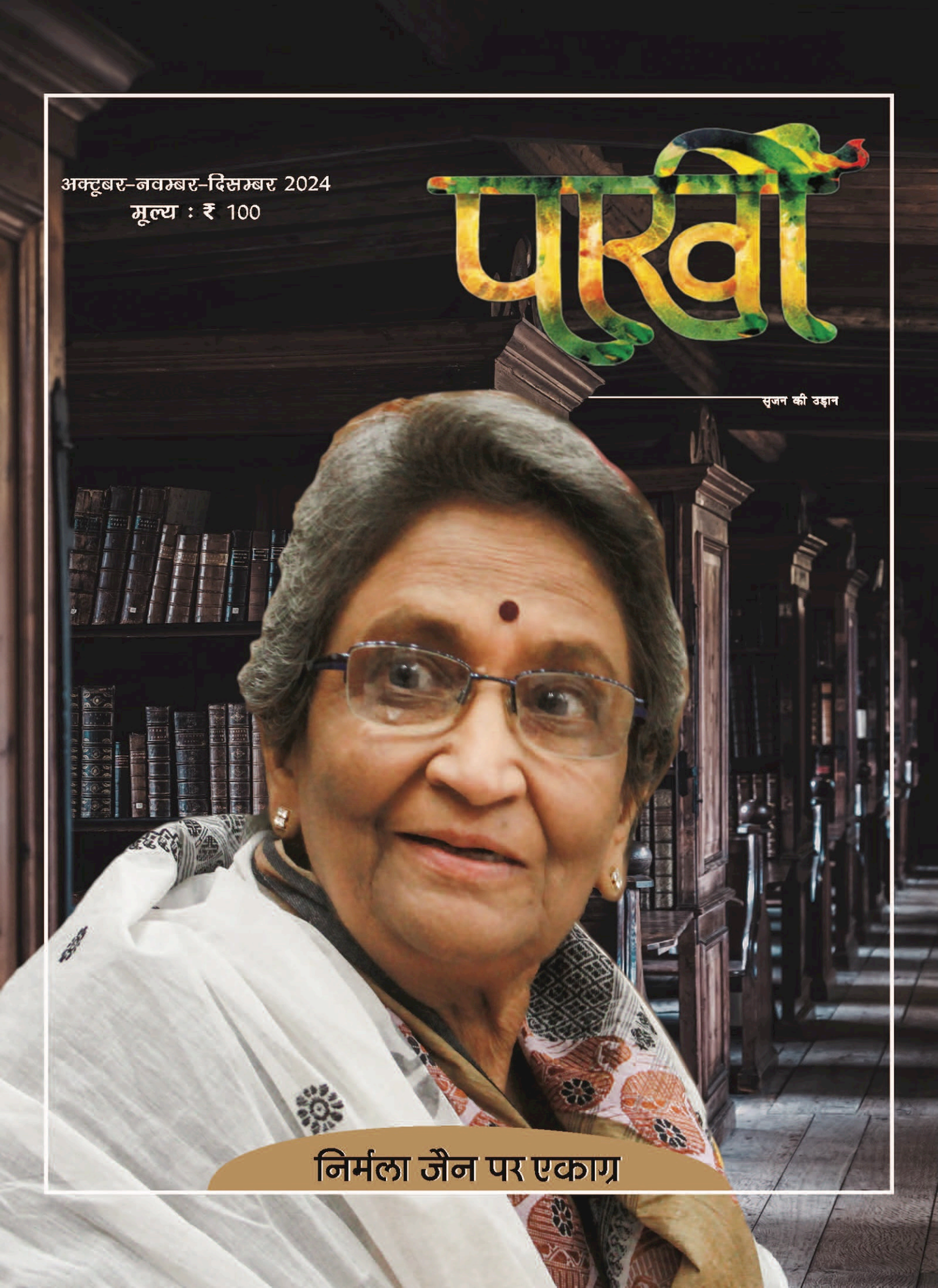

निर्मला जैन पर एकाग्र

वर्ष : 17, अंक 1-3

अक्टूबर-नवंबर-दिसंबर, 2024

इंडिपेंडेंट मीडिया इनीशिएटिव सोसायटी
बी-107, सेक्टर-63, नोएडा-201309
गौतमबुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश
दूरभाष : 0120-4330755
editor@pakhi.in
shailey1961@gmail.com
pakhimagazine@gmail.com
www.facebook.com/pakhimagazine
Web portal : www.pakhi.in

प्रति : रु. 50.00
वार्षिक, रजिस्टर्ड डाक सहित : रु. 1000.00
आजीवन, रजिस्टर्ड डाक सहित : रु. 10000.00
भुगतान इंडिपेंडेंट मीडिया इनीशिएटिव सोसाइटी के नाम से किया जाए।
भुगतान ऑनलाइन या सीधे बैंक में भी जमा कर सकते हैं :
बैंक : UNION BANK
खाता संख्या : 520101255568785
IFSC : UBIN **0905011**
बैंक शाखा : जी-28, सेक्टर-18, नोएडा-201301
उत्तर प्रदेश

सर्वाधिकार सुरक्षित
प्रकाशित सामग्री के उपयोग के लिए लेखक और प्रकाशक की अनुमति आवश्यक है। प्रकाशित रचनाओं के विचार से प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अंतर्गत विचारणीय।

स्वामित्व इंडिपेंडेंट मीडिया इनिशिएटिव सोसाइटी के लिए प्रकाशक, मुद्रक नारायण सिंह राणा द्वारा चार दिशाएं प्रिंटर्स प्रा.लि. जी-39, नोएडा से मुद्रित एवं बी-107, सेक्टर 63, नोएडा से प्रकाशित।

अतिथि संपादक पूर्णतः अवैतनिक

संपादक
अपूर्व

अतिथि संपादक
पंकज शर्मा

महाप्रबंधक
अमित कुमार

शब्द संयोजन
उषा ठाकुर

अनुक्रमणिका

मेरी बात : अपूर्व — जैसे उड़ि जहाज को पंछी... 3

यूटोपिया : पंकज शर्मा — निर्मला जैन होना कोई हंसी-ठट्ठे का खेल नहीं 5

धरोहर

'शहर-दर-शहर' के बहाने : कृष्णा सोबती 10

थाती

'दायित्व-गहन भाषा... : निर्मला जैन 16

दिल्ली: चलने का नाम : निर्मला जैन 20

जमाने में हम : निर्मला जैन 24

पथ के साथी

निर्मला जैन की मैत्री... : उषा प्रियंवदा 28

निर्मला जैन के बहाने... : विभूति नारायण राय 31

संस्मरण-1

खूब लड़ी मर्दानी : सत्यकाम 35

एक गर्विली विहंसती छवि : चंद्रकला त्रिपाठी 38

ज्ञान गरिमा और मनुष्य... : जितेंद्र श्रीवास्तव 43

हमार अभाग, हनुक नहि... : विभा रानी 45

संस्मरण-2

बेचूक की पक्षधर : दिविक रमेश 47

अपनी राह की अन्वेषक... : प्रेम जनमेजय 52

प्रो. जैन : हमारी गुरु... : हरि मोहन शर्मा 59

मेरी गुरुवर प्रोफेसर... : हरजेंद्र चौधरी 62

डरते और उबरते : विजया सती 66

गुरुग्राम में गुरुवर से भेंट : किशोर कुमार कौशल 69

संस्मरण-3

मैडम निर्मला जैन... : रामेश्वर राय 71

मेधा, सृजन और दृढ़ता... : रेखा सेठी 75

मैडम की खामोशी... : अचला शर्मा 80

मूल्यांकन-1

कविता का प्रति संसार... : दुर्गा प्रसाद गुप्त 85

पश्चिमी आलोचना के... : भरत प्रसाद 90

हिंदी कथा समीक्षा और... : प्रेम शशांक 95

पुरुष वर्चस्व बनाम स्त्री... : सरोज कुमारी 102

आलोचना की सार्थकता : किरण मिश्रा 107

निर्मला जैन की आलोचना... : अरुण कुमार 110

आलोचना की शिनाख्त... : शुभम मोंगा 114

मूल्यांकन-2 (पुस्तक के बहाने)

दिल्ली के जीते-जागते... : ज्योति चावला 117

शहरबीती की अनूठी... : रेनू त्रिपाठी 121

फिर फिर जीवन : भूपेंद्र बिष्ट 126

पहले जमाना फिर हम : पूनम मानकर पिसे 129

रस सिद्धांत और सौंदर्यशास्त्र... : गौरी त्रिपाठी 133

अद्वितीय प्राच्य रस-मर्मज्ञ... : किरण सूद 137

एक अनुपम आलोचनात्मक... : ममता जयंत 141

आधुनिक मूल्य-बोध संपन्न... : कुमार वरुण 145

हिंदी आलोचना से साक्षात्कार : अरुंधति 149

हिंदी आलोचना की बीसवीं... : हनी दर्शन 153

सहज संप्रेषणीयता की मिसाल : अमित साव 156

मूल्यांकन-3 (अनुवाद के बहाने)

उदात्त के विषय में... : विजय शर्मा 160

साहित्य का समाजशास्त्रीय... : निशांत 163

'उदात्त' अर्थात् ऑन द... : डॉ. सुनीता 167

'अनुवाद मीमांसा' को पढ़ते... : प्रभाकरण हेब्बार इल्लत 170

प्रति-संसार / शब्द चित्र

इंटरनेट पर निर्मला जैन की... : अर्पण कुमार 172

निर्मला जैन : तीन शब्द-चित्र : राजेश जैन 175

कवर फोटो : भरत तिवारी

आवरण परिकल्पना : जनार्दन सिंह

जैसे उड़ि जहाज को पंछी...

2008 से 2024 के मध्य मेरे लिए बहुत कुछ, बहुत तेजी से बदला है। इस बदलने की क्रिया ने इतना कुछ बदल डाला है कि कभी-कभी स्वयं के होने पर भी मुझे शंका होने लगती है। अभी कुछ समय पहले, शायद तीन महीने पहले बस यूं ही एक विडियो बना सोशल मीडिया में डाला था। शायद मेरा सच, या शायद मेरा वर्तमान कि 'हम तो बस चूक गए, थोड़े से बाकी हैं, देने को कुछ नहीं, मांगने को माफी है/तेरी यादों के किसी कोने में ठहरे हैं, शेष यात्रा के लिए बस इतना काफी है।' पहाड़ों का एकांत, वहां का सन्नाटा कई बार गहरा अवसाद पैदा कर देता है। शायद खुद के चूकने का भाव एक प्रकार का अवसाद ही है। फिर राबर्ट फ्रास्ट याद आ जाते हैं। जवाहरलाल नेहरू मेरे शहर रानीखेत के मॉल रोड में उनकी कविता को गुनगुनाया करते थे–'The woods are lovely dark and deep, But I have promises to keep, And miles to go before I sleep, And miles to go before I sleep.' मुझे यह पंक्तियां बेहद प्रेरणा देने का काम बचपन से करती आई हैं। हालांकि अब मीलों चलने का, कुछ पाने का कोई का तो इरादा है, ना ही इच्छा। हां वायदे हैं जिन्हें पूरा करना तो बनता है। 'पाखी' की निर्बाध उड़ान ऐसा ही एक वायदा है जो मैंने खुद से भी किया था और उन तीन दिग्गजों से भी किया जिनका असीम स्नेह, आशीर्वाद मुझे मिला–नामवर सिंह राजेंद्र यादव और प्रभाष जोशी। इस वायदे को निभाने की इच्छा ही तो है जिसके चलते एक बार फिर से आपसे अपनी बात कह रहा हूं।

सूरदास ने श्रीकृष्ण के प्रति अपने अपार प्रेम को 'जैसे उड़ि जहाज को पंछि फिरी जहाज पै आवै' कह पुकारा। 'पाखी' के संपादकीय दायित्वों को कई बार स्वेच्छा से छोड़ने और फिर हालातों के दवाब में पुनः वापसी करने को मैं 'पाखी' के प्रति अपना प्रेम अथवा समर्पण नहीं कह सकता। यह कहना सरासर झूठ होगा। इन्हें हालात चलते उठाया गया कदम कह पुकारा जाना सच के सबसे करीब होगा। पूर्ण सत्य यह भी नहीं क्योंकि हर बार की तरह इस बार भी शैलेय के यकायक हाथ खड़े कर देने के बाद कई प्रस्ताव मुझे मिले जिनमें या तो किसी लब्ध प्रतिष्ठित लेखक का नाम मुझे सुझाया गया या फिर कुछ मित्रों ने स्वयं को इस कार्य के लिए प्रस्तुत किया। अबकी बार लेकिन पहाड़ों के एकांत में बैठ मैंने गंभीरता से इस विषय पर सोचा। अतीत की यात्रा भी की। 'पाखी' के पहले तीन साल के अंकों को उलटा-पलटा। अपना ही लिखा पढ़ा। नामवर सिंह, राजेंद्र यादव और प्रभाष जोशी को याद किया। याद आए इस पत्रिका और मेरे बारे में उनके कथन। तब इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि एक बार फिर से, पूरे मनोयोग के साथ इस जिम्मेदारी को पुनः संभालू। कम से कम प्रयास तो करूं कि वर्ष 2008 वाला उत्साह वापस ला सकूं। हालांकि अब वैसा उत्साह वापस ला पाना कठिन लगता है। उत्साह दरअसल पैदा नहीं किया जा सकता, स्वस्फूर्त होता है तो उसके टिके रहने की संभावना रहती है, जबरन किए जाने वाला कोई भी कार्य स्थाई हो ही नहीं सकता। 2008 से 2024 के मध्य मेरे लिए बहुत कुछ, बहुत तेजी से बदला है। इस बदलने की क्रिया ने इतना कुछ बदल डाला है कि कभी-कभी स्वयं के होने पर भी मुझे शंका होने लगती है। अभी कुछ, शायद तीन महीने पहले बस यूं ही विडियो बना सोशल मीडिया में डाला था। शायद मेरा सच या शायद मेरा वर्तमान कि 'हम तो बस चूक गए, थोड़े से बाकी हैं, देने को कुछ नहीं, मांगने को माफी है। तेरी यादों के किसी कोने में ठहरे हैं, शेष यात्रा के लिए बस इतना काफी है।' पहाड़ों का एकांत, वहां का सन्नाटा कई बार गहरा अवसाद पैदा कर देता है। शायद खुद के चूकने का भाव एक प्रकार का अवसाद ही है। फिर राबर्ट फ्रास्ट याद आ जाते हैं। जवाहरलाल नेहरू मेरे शहर रानीखेत के मॉल रोड में उनकी कविता को गुनगुनाया करते थे–'The woods are dark and deep, But I have promises to keep, And miles to go before I sleep, And miles to go before I sleep.' मुझे यह पंक्तियां बेहद प्रेरणा देने का काम बचपन से करती आई हैं। हालांकि अब मीलों चलने का, कुछ पाने का कोई का तो इरादा है, ना ही इच्छा। हां वायदे हैं जिन्हें पूरा करना तो बनता है। 'पाखी' की निर्बाध उड़ान ऐसा ही एक वायदा है जो मैंने खुद से भी किया था और उन तीन दिग्गजों से भी किया जिनका असीम स्नेह, आशीर्वाद मुझे मिला–नामवर, सिंह राजेंद्र यादव और प्रभाष जोशी। इस वायदे को निभाने की इच्छा ही तो है जिसके चलते एक बार फिर से आपसे अपनी बात कह रहा हूं।

नामवर सिंह ने 'पाखी' के प्रवेशांक कार्यक्रम में कहा था कि इसकी उड़ान ना केवल नियमित होनी चाहिए, निःस्वार्थ होनी चाहिए बल्कि साहित्य संसार की गुटबाजी और खेमेबंदी से भी इसे बचाकर रखना होगा। मेरा और पत्रिका के पहले कार्यकारी संपादक प्रेम भारद्वाज, दोनों का ही साहित्य की दुनिया से दूर-दूर तक का वास्ता तक तब नहीं था। इसलिए